प्रेस विज्ञप्ति

किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशासन की तरफ से बरसात के मौसम को देखते हुए मच्छर जनित रोगो की रोकथाम के लिए उचित प्रबंधन किया जा रहा है। मच्छरो के लार्वा को नष्ट करने के लिए पेस्ट कंट्रोल ऑफ इंडिया को गत माह आदेशित किया जा चूका है। इस क्रम में पेस्ट कंट्रोल ऑफ इंडिया द्वारा सप्ताह में एक बार पूरे चिकित्सा विश्वविद्यालय परिसर में टेमेफोस दवा का छिड़काव कर लार्वा को नष्ट किया जाता है। संस्थान के पर्यावरण विभाग द्वारा दिनांक 6 जून 2017 को समस्त विभागो के विभागाध्यक्षो को नोटिस जारी कर यह अनुरोध किया गया था की वो अपने विभाग में उपयोग हो रहे कूलरो का पानी साफ कर दें। गमलों एवं खूले स्थान पर पानी इकठ्ठा न होने दे।

इसके अतिरिक्त डेंगू/स्वाईन फ्लू एवं अन्य वेक्टर जनित रोगों की रोकथाम के लिए चिकित्सा विश्वविद्यालय मे बरसात के पूर्व 28 जून, 2017 को मुख्य चिकित्सा अधीक्षक प्रो0 एस0एन0 शंखवार के द्वारा ड्राई डे का अह्वान किया गया था। जिसके अंतर्गत संस्थान में सारे कूलरों से पानी हटाने की व्यवस्था करने का आग्रह किया गया था। अब बरसात चालू होने के उपरांत चिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशासान द्वारा विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष एवं सम्बंधित अधिकारियों को सूचित किया है कि विभागों एवं छात्रावासों की छतों तथा अन्य स्थानों पर एकत्रित टूटी-फूटी सामग्री इत्यादि को पूर्णतः हटवा दे जिससे की अनावश्यक रूप से पानी इकठ्ठा न होने पाए। वेक्टर जनित रोगों के लिए जिम्मेदार लार्वा पनपने ना पाए इस सम्बंध मे चिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशासन पूर्णतया सजग है और इनकी रोकथाम के लिए प्रयत्नशील है।

चिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशासन इन उपरोक्त दिशा निर्देशों के अनुपालन का पूर्ण उत्तर दायित्व सुनिश्चित कर रहा है। समस्त विभागों को इस दिशा में उचित कदम उठाने का निर्देश दिया जा चुका है।

सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रम

आज दिनांक 08 जुलाई 2017 को किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के सी0टी0वी0एस0 विभाग द्वारा एक सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रम का आयोजन अपराह्न 12:00 बजे किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटन समरोह में मुख्य अतिथि माननीय कुलपति प्रो0 मदनलाल ब्रह्म भट्ट जी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता डॉ0 अजय यादव, निदेशक वैश्कुलर कैथलैब, डाईबेटिक फूट केयर सेंटर, सर गंगा राम अस्पाताल, नई दिल्ली द्वारा कंवेशनल वैस्कुलर सर्जरी टू इंडोवैस्ककुलर सोल्यूशन विषय पर व्याखान दिया गया । जब किसी मरीज के पैर की कोई नस में रक्त प्रवाह की रूकावट पैदा हो जायें पैर काला पड़ने लगे या घाव हो जाये तो उसे वैस्कुलर सर्जन के पास जाना चाहिए। क्योंकि जब तक पैर में खून का प्रवाह नही बढ़ेगा तब तक जख्म नही भरेगा। ऐसे मरीजो मे वैस्कुलर सर्जरी के प्रति जागरूकता बढ़ाने की जरूरत है। मधुमेह रोगियो को अपने ब्लड शूगर की जांच कराने, हृदय की जांच कराने के साथ ही साथ अपने डॉक्टर को अपने पैर की नसो को भी दिखाना चाहिए। हृदय की तकलीफ, धूम्रपान और उम्र बढ़ने की वजह से पैर की नसो में ब्लॉकेज होने लगती है जिससे पैर मे खून नही जाता है और गैंग्रीन होने लगता है पैरा काला होना शुरू होने पर हमे पैर की नसों की एंजियोप्लास्टि करनी पड़ती है या ओपेन सर्जरी करनी पड़ती है। वैरिकोज वेन को लेजर या रेडियोफ्रिक्वेंसी से ठीक किया जाता है। दिल की नस को छोड़ शरीर की अन्य जगह की नसों को वैस्कुलर सर्जन इसे सही करता है।

कार्यक्रम में माननीय कुलपति जी ने कहा कि चिकित्सा विश्वविद्यालय में क्लीनिकल और टीचिंग की गुणवत्ता में सुधार लाने संकाय सदस्यो के प्रशिक्षण के लिए इस प्रकार के कार्यक्रम आने वाले अतिथि वक्ता विशेष योग दान देते है।

कार्यक्रम के समापन अवसर चिकित्सा विश्वविद्यालय के सी0टी0वी0एस0 विभाग के प्रो0 शैलेन्द्र कुमार द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। कार्यक्रम में उपस्थित व्यक्तियों में प्रो0 एस0एन0 शंखवार, सी0एम0एस0, प्रो0 विजय कुमार, एम0एस0, प्रो0 वी0एस0 नरायण, विभागाध्यक्ष हृदय रोग विभाग, प्रो0 एस0के0 सिंह, प्रो0 संदीप तिवारी सहित अन्य संकाय सदस्य एवं रेजिडेण्ट डॉक्टर्स उपस्थित रहे।

(प्रो0 नरसिंह वर्मा)
फैकल्टी इंचार्ज, मीडिया सेल
चिकित्सा संकाय, केजीएमयू

(प्रो0 विभा सिंह)
फैकल्टी इंचार्ज, मीडिया सेल
दंत सकाय केजीएमयू